# सामाजिक विज्ञान

## (इतिहास)

## अध्याय-7: देशी जनता को सभ्य बनाना राष्ट्र को शिक्षित करना

SHIVOM CLASSES 8696608541

# देशी जनता को सभ्य बनाना राष्ट्र को शिक्षित करना

**अंग्रेज :-** " देशी समाज को सभ्य बनाना " है और उनके रीति-रिवाजों और मूल्य-मान्यताओं को बदलना है।और भारतीयों को शिक्षित "सभ्य",और " अच्छी प्रजा " बनाने का लक्ष्य था।

**भाषाविद :-** एक ऐसा व्यक्ति जो कई भाषाओं का जानकार और विद्यार्थी होता है।

**प्राच्यवादी :-** एशिया की भाषा और संस्कृति का गहन ज्ञान रखने वाले लोग।

**अंग्रेज़ शिक्षा को किस तरह देखते थे**

## प्राच्यवाद की परंपरा

सन 1783 में विलियम जोन्स नाम के एक सज्जन कलकत्ता आए। उन्हें ईस्ट कंपनी द्वारा स्थापित किए गए सुप्रीम कोर्ट में जूनियर जज के पद पर तैनात किया गया था। क़ानून का माहिर होने के साथ-साथ जोन्स एक भाषाविद भी थे।

उन्होंने ऑक्सफर्ड में ग्रीक और लैटिन का अध्ययन किया था। वे फ्रैंच और अंग्रेज़ी जानते थे और अपने एक दोस्त से अरबी सीखने के अलावा फ़ारसी भी सीख चुके थे। इसके अलावा संस्कृत, कानून, दर्शन, धर्म, राजनीति, नैतिकता, अंकगणित, चिकित्सा विज्ञान, विज्ञान, प्राचीन भारतीय पुस्तकों का अध्ययन शुरू कर दिया।

## हेनरी टॉमस कोलब्रुक

वह संस्कृत तथा हिंदुत्व के प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों के विद्धान थे। हैनरी टॉमस कोलब्रुक, नैथेनियल और जोन्स ने ' एशियाटिक सोसायटी ऑफ़ बंगाल ' के गठन किया और एशियाटिक रिसर्च नामक शोध पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया।

SHIVOM CLASSES 8696608541



SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

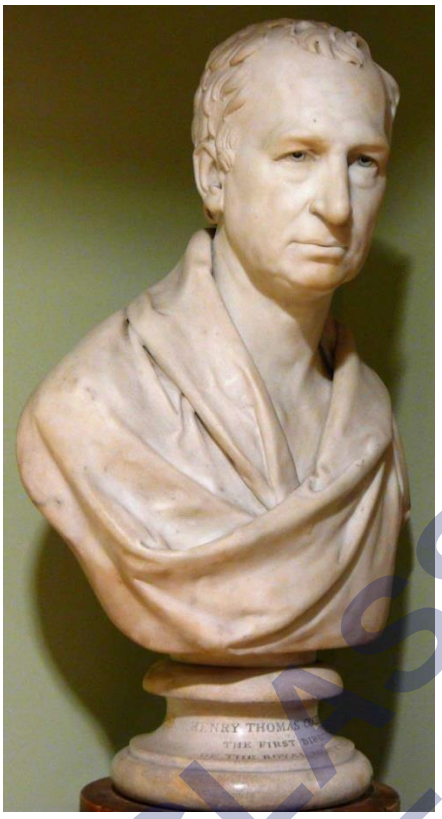

## मदरसा

सीखने के स्थान को अरबी भाषा में मदरसा कहा जाता है। यह किसी भी तरह का स्कूल या कॉलेज या कोई और संस्थान हो सकता है। 1781 में अरबी, फ़ारसी, इस्लामिक कानून के अध्ययन को बढ़ावा देने के लिए कलकत्ता में एक मदरसा खोल गया। 1791 में बनारस में " हिन्दू कॉलेज " की स्थापना की गई ताकि वहाँ प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों की शिक्षा दी जा सके और देश का शासन चलाने में मदद मिले।

SHIVOM CLASSES 8696608541



SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

**मुंशी :-** ऐसा व्यक्ति जो फ़ारसी पढ़ना, लिखना और पढ़ाना जानता हो।

## पूरब की जघन्य गलतियाँ

उन्नसवीं सदी की शुरूआत से ही सारे अंग्रेज अफ़सर शिक्षा के प्राच्यवादी दृष्टिकोण की आलोचना करने लगे थे। उनका कहना था कि पूर्वी समाजों का ज्ञान त्रुटियों से भरा हुआ और अवैज्ञानिक है। उनके मुताबिक पूर्वी साहित्य अगंभीर और सतही था। इसलिए उन्होंने दलील दी कि अंग्रेजों को अरबी और संस्कृत भाषा व साहित्य के अध्ययन को बढ़ावा देने पर इतना ख़र्चा करना चाहिए । भारतीयों को पूर्वी समाजों के काव्य और धार्मिक साहित्य की बजाय ये पढ़ाना जाना चाहिए कि पश्चिम ने किस तरह की वैज्ञानिक और तकनीकी सफलताएँ हासिल कर ली है।

## मैकॉले

1835 में अंग्रेजों का शिक्षा अधिनियम पारित किया गया। अंग्रेजी पढ़ाना लोगों को सभ्य बनाने, उनकी रूचियों, मूल्यों और संस्कृति को बदलने का रास्ता हो सकता है। कलकत्ता का मदरसे और बनारस संस्कृत कॉलेज जैसे प्राच्यवादी संस्थाओं को प्रोत्साहन न दिया जाए ।

## व्यवसाय के लिए शिक्षा

SHIVOM CLASSES 8696608541



SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

1854 में ईस्ट इंडिया कंपनी के लंदन स्थित कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स ने भारतीय गवर्नर जनरल को शिक्षा के विषय में एक नोट भेजा। कंपनी के नियंत्रक मंडल के अध्यक्ष चलर्स वुड के नाम से जारी किए गए इस संदेश को वुड का नीतिपत्र ( वुड्ड डिस्पैच ) के नाम से जाना जाता है।

प्राच्यवादी ज्ञान के स्थान पर यूरोपीय शिक्षा को।अपनाने से व्यवहारिक आर्थिक क्षेत्र में लाभ प्राप्त होंगे। उसके मुताबिक, यूरोपीय शिक्षा बीके माध्यम से भारतीयों को व्यापार और वाणिज्य के विस्तार से होने वाले लाभों को समझने और देश के संसाधनों के विकास का महत्व समझने में मदद मिलेगी। और यूरोपीय जीवन शैली से उनकी रुचियों और आकांक्षाओं में बदलाव आएगा।

1854 में नीतिपत्र के बाद अंग्रेजों ने कई अहम कदम उठाए। सरकारी शिक्षा विभागों का गठन किया ताकि शिक्षा संबंधी सभी मामलों पर सरकार का नियंत्रण स्थापित किया जा सके। स्कूली शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन के प्रयास भी किए गए।

**स्थानीय पाठशालाओं का क्या हुआ**

## विलियम एडम की रिपोर्ट

1830 के दशक में स्कॉटलैंड से आए ईसाई प्रचारक विलियम एडम ने बंगाल और बिहार के जिलों का दौरा किया। कंपनी ने उन्हें डेढ़ी स्कूलों में शिक्षा की प्रगति पर रिपोर्ट तैयार करने का जिम्मा सौंपा था। एडम ने पाया कि बंगाल और बिहार में एक लाख से ज्यादा पाठशालाएँ है।

**नई दिनचर्या, नए नियम :-** उन्नसवीं सदी के मध्य तक कंपनी का ध्यान मुख्य रूप बसे उच्च शिक्षा पर था।1854 में कंपनी ने देशी शिक्षा व्यवस्था में सुधार लाने का फैसला लिया। कंपनी एक नई दिनचर्या, नए नियमों और नियमित निरीक्षणों के जरिए पाठशालाओं को और व्यवस्थित करना चाहती थी।

## राष्ट्रीय शिक्षा की कार्यसूची

उन्नसवीं सदी की शुरुआत से ही भारत के विभिन्न भागों के बहुत सारे विचारक शिक्षा के व्यापक प्रसार की जरुरत पर जोर देने लगे थे। भारतीयों का मानना था कि पश्चिमी शिक्षा का आधुनिकीकरण कर सकती है।

**भारतीय पश्चिमी शिक्षा के विरुद्ध थे महात्मा गांधी और रविन्द्रनाथ टैगोर।**

SHIVOM CLASSES 8696608541



SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

**महात्मा गांधी :- " अंग्रेजी शिक्षा ने हमें गुलाम बना दिया है "**

## औपनिवेशिक शिक्षा

महात्मा गांधी का कहना था कि औपनिवेशिक शिक्षा ने भारतीयों के मस्तिष्क में हीनता का बोध पैदा कर दिया है। इसके प्रभाव में आकर यहाँ के लोग पश्चिमी सभ्यता को श्रेष्ठतर मानने लगे हैं और अपनी संस्कृति के प्रति उनका गौरव भाव नष्ट हो गया है। महात्मा गांधी ने कहा कि इस शिक्षा में विष भरा है, यह पापपूर्ण है, इसने भारतीयों को दास बना है, इसने लोंगो पर प्रभाव डाला है। महात्मा गांधी एक ऐसी शिक्षा के पक्षधर थे जो भारतीयों के भीतर प्रतिष्ठा और स्वाभिमान का भाव पुनर्जीवित करे।

महात्मा गांधी की दृढ़ मान्यता थी कि शिक्षा केवल भरतीय भाषओं में ही दी जानी चाहिए । उनके मुताबिक अंग्रेजी में दी जा रही शिक्षा भारतीयों को अपाहिज बना देती है और अपने सामाजिक परिवेश से काट दिया है और उन्हें "अपने ही भूमि पर अजनबी " बना दिया है।

गांधी का तर्क था कि शिक्षा से व्यक्ति का दिमाग और आत्मा विकसित होनी चाहिए

## टैगोर का " शांतिनिकेतन "

रविन्द्रनाथ टैगोर ने यह संस्था 1901 में शुरू की थी। टैगोर जब बच्चे थे तो स्कूल जाने से बहुत चिढ़ते थे। वहाँ उनका दम घुटता था। उन्हें स्कूल का माहौल दमनकारी लगता था। मानो स्कूल जेल हो, क्योंकि वहाँ बच्चे मनचाहा कभी नही कर पाते थे। जब दूसरे बच्चे शिक्षक को सुन रहे होते थे, टैगोर का दिमाग कहीं और भटक रहा होता था। जब वे बड़े हुए तो उन्होंने एक ऐसा स्कूल खोलने के बारे में सोच जहाँ बच्चे खुश रह सके, जहाँ वे मुक्त और रचनाशील हों, जहाँ वे अपने विचारों और आकांक्षाओं को समझ सकें

**टैगोर :-** बचपन का समय अपने आप सीखने का समय होना चाहिए। शिक्षा व्यवस्था के कड़े और बंधनकारी अनुशासन से मुक्त होना चाहिए।

**शिक्षक :-** शिक्षक कल्पनाशील हों, बच्चे को समझते हों और उनके अंदर उत्सुकता, जानने की चाह विकसित करने में मदद दें और रचनाशीलता हो।

SHIVOM CLASSES 8696608541



SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

**गांधी :-** बालक के दिमाग और आत्मा का सर्वोच्च विकास शिक्षा से ही संभव है। साक्षरता न तो शिक्षा का अंत और न ही उसकीं शुरुआत । यह तो केवल एक साधन है।

SHIVOM CLASSES
8696608541



SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

## NCERT SOLUTIONS

## प्रश्न (पृष्ठ संख्या 92)

प्रश्न 1 निम्नलिखित के जोड़े बनाएँ:-

| | |
|---|---|
| विलियम जोन्स | अंग्रेजी शिक्षा को प्रोत्साहन |
| रवीन्द्रनाथ टैगोर | प्राचीन संस्कृतियों का सम्मान |
| टॉमस मैकॉले | गुरु |
| महात्मा गांधी | प्राकृतिक परिवेश में शिक्षा |
| पाठशालाएँ | अंग्रेजी शिक्षा के विरुद्ध |

उत्तर –

| | |
|---|---|
| विलियम जोन्स | प्राचीन संस्कृतियों का सम्मान |
| रवीन्द्रनाथ टैगोर | प्राकृतिक परिवेश में शिक्षा |
| टॉमस मैकॉले | अंग्रेजी शिक्षा को प्रोत्साहन |
| महात्मा गांधी | अंग्रेजी शिक्षा के विरुद्ध |
| पाठशालाएँ | गुरु |

प्रश्न 2 निम्नलिखित में से सही या गलत बताएँ:-

1. जेम्स मिल प्राच्यवादियों के घोर आलोचक थे।
2. 1854 के शिक्षा संबंधी डिस्पैच में इस बात पर जोर दिया गया था कि भारत में उच्च शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी होना चाहिए।
3. महात्मा गांधी मानते थे कि साक्षरता बढ़ाना ही शिक्षा का सबसे महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है।
4. रवीन्द्रनाथ टैगोर को लगता था कि बच्चों पर सख्त अनुशासन होना चाहिए।

उत्तर –

SHIVOM CLASSES 8696608541



SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

1. सही
2. सही
3. सही
4. गलत

## प्रश्न (पृष्ठ संख्या 93)

प्रश्न 3 विलियम जोन्स को भारतीय इतिहास, दर्शन और कानून का अध्ययन क्यों जरूरी दिखाई देता था ?

उत्तर – विलियम जोन्स भारत के प्रति विशेष दृष्टिकोण रखते थे। उनका मानना था कि भारतीय सभ्यता प्राचीनकाल में अपने वैभव के शिखर पर थी, परंतु बाद में उसका पतन हो गया। इसलिए भारत को समझने के लिए प्राचीन भारतीय इतिहास, दर्शन और कानून का अध्ययन जरूरी है। उनके अनुसार हिंदुओं तथा मुसलमानों के असली विचारों तथा कानून को इन्हीं की ही रचनाओं के द्वारा ही समझा जा सकता है। इन रचनाओं के पुनः अध्ययन से ही भारत के भावी विकास का आधार पैदा हो सकता है।

प्रश्न 4 जेम्स मिल और टॉमस मैकॉले ऐसा क्यों सोचते थे कि भारत में यूरोपीय शिक्षा अनिवार्य है ?

उत्तर – जेम्स मिल और टॉमस मैकॉले यूरोपीय शिक्षा को विश्व की सर्वश्रेष्ठ शिक्षा मानते थे। वे सोचते थे कि अंग्रेज़ी के ज्ञान से भारतीयों को संसार के श्रेष्ठतम साहित्य को पढ़ने का अवसर मिलेगा। साथ ही जेम्स मिल और टॉमस मैकॉले का मानना था कि इससे भारतीयों को पश्चिमी विज्ञान और दर्शन के क्षेत्र में हुए विकास को जानने का भी मौका मिलेगा।

यूरोपीय शिक्षा के माध्यम से भारतीयों को व्यापार और वाणिज्य वे विस्तार से होने वाले लाभों को समझने और देश के संसाधनों के विकास का महत्त्व समझने में मदद मिलेगी। यदि उन्हें यूरोपीय जीवन शैली से अवगत कराया गया तो उनकी रुचियों और आकांक्षाओं में भी बदलाव आएगा और ब्रिटिश वस्तुओं की मांग पैदा होगी क्योंकि अब यहां के लोग यरोप से बनी चीजों को अपनाना और खरीदना शुरू कर देंगे।

प्रश्न 5 महात्मा गांधी बच्चों को हस्तकलाएँ क्यों सीखाना चाहते थे ?

SHIVOM CLASSES 8696608541

उत्तर – महात्मा गांधी का कहना था कि पश्चिमी शिक्षा मौखिक ज्ञान की बजाय सिर्फ पढ़ने और लिखने पर ही केंद्रित है। उसमें पाठ्य–पुस्तकों पर तो जोर दिया जाता है परंतु जीवन के अनुभवों और व्यावहारिक ज्ञान की उपेक्षा की जाती है। उनकी राय थी कि शिक्षा से व्यक्ति का दिमाग और आत्मा विकसित होनी चाहिए। केवल साक्षरता अर्थात पढ़ने और लिखने की क्षमता पा लेना ही शिक्षा नहीं होती। इसके लिए लोगों को हाथ से काम करना पड़ता है। कलाएं सीखनी पड़ती हैं और यह जानना पड़ता है कि विभिन्न चीजें किस रह काम करती हैं। इससे उनका मस्तिष्क और समझने की क्षमता दोनों विकसित होंगे। इसी कारण वे बच्चों को हस्तकलाएं सिखाना चाहते थे।

प्रश्न 6 महात्मा गांधी ऐसा क्यों सोचते थे कि अंग्रेजी शिक्षा ने भारतीयों को गुलाम बना लिया है ?

उत्तर – महात्मा गांधी ऐसा सोचते थे कि औपनिवेशिक शिक्षा ने भारतीयों के मस्तिष्क में हीनता का बोध पैदा कर दिया है। इसके प्रभाव में आकर यहाँ के लोग पश्चिमी सभ्यता को श्रेष्ठ समझने लगे हैं। उनका अपनी संस्कृति के प्रति गौरव भाव नष्ट हो गया है। महात्मा गाँधी का कहना था कि इस शिक्षा में जहर भरा है, इसने भारतीयों को दास बना दिया है। उनके अनुसार पश्चिम से प्रभावित लोग पश्चिम से आने वाली हर वस्तु की प्रशंसा करने लगे है और ब्रिटिश शासन को पसंद करने लगे है। महात्मा गाँधी के अनुसार अंग्रेजी में दी जा रही शिक्षा ने भारतीयों को अपाहिज बना दिया है और उन्हें अपने सामाजिक परिवेश से काट दिया है। इसने उन्हें अपनी ही ज़मीन पर अजनबी बना दिया है। उनके विचार में अंग्रेजी शिक्षित भारतीय अपने जनता से जुड़ने के तौर तरीके भूल चूके हैं। ये सभी बातें भारतीयों की गुलामी का प्रतीक है।

SHIVOM CLASSES 8696608541



SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)